फ्लैट नम्बर 4C

पोइली सेनगुप्ता

रतन को पक्का यकीन था कि 4-सी फ्लैट में आया नया किराएदार स्मगलर ही है। घनी, काली-सीधी भौंहों वाला वो आदमी हँसता तो था ही नहीं। और जब हँसता उसके ऊबड़-खाबड़ दाँत दिखाई देने लगते। बिलकुल फिल्म *मोती-मोती* के खलनायक की तरह। और उसके घर का फर्नीचर तो देखो! – एक झूला, एक मेज़, दो कुर्सियाँ और एक लोहे की अलमारी, बस। काफी सारा सामान तो अकेले रतन के पापा ही ऊपर चढ़ा ले गए थे। बस एक अलमारी थी जिसके लिए माली को बुलाया था। वैसे वो भी छोटी-सी ही तो थी।

सामान इतना कम था कि दो-तीन चक्कर में ही ऊपर पहुँच गया था। कमरे के एक कोने में ही सारा सामान आ गया था। रतन बिल्डिंग में रहने वाले दूसरे घरों की बैठकों के बारे में सोचने लगा। 2-ए में रहनेवाले भास्कर-ओरों की लम्बी-लम्बी कुर्सियाँ और ढेर सारी किताबें! और वो 4 बी के गोपी-लोगों का घर! क्या खूबसूरत है! उनके गद्देदार लाल कालीन में तो पैर धँसा ही चला जाता है। सोफे के नीचे तक कालीन बिछा है। और टीवी इत्ती बड़ी कि उठाने के लिए 6-6 लोग चाहिए।

हाँ, एक बात और! इस नए किराएदार को इसी ब्लॉक में क्यों आना था? इसके साथ तो परिवार भी नहीं है। वो तो हमारी बिल्डिंग के सामने वाले नीलगिरि अपार्टमेंट में भी आराम से रह सकता था। वहाँ एक कमरे वाले कई फ्लैट हैं। यहीं क्यों आया – तीन कमरे, एक बैठक और दो गुसलखाने वाले फ्लैट में? दो-दो गुसलखाने, सोचो तो!

"वो शायद एक कमरे में अपनी चप्पलें रखेगा और दूसरे में जूते...।" भास्कर बोला।

"और उसकी शर्ट की एक बाजू एक कमरे में रहेगी तो दूसरी दूसरे कमरे में।" पन्ना बीच में ही कूद पड़ी।

पर, रतन जानता था कि यह आदमी ज़रूर चोर ही है। और पुलिस से बचने के लिए यहाँ आया है। फिल्म *एक हीरा* के स्मगलर की तरह। कई परिवारों वाला यह ब्लॉक छिपने के हिसाब से अच्छी जगह है।

"रतन, तुम्हारी दिक्कत यह है कि तुम फिल्में बहुत देखते हो।" भास्कर की बहन बीना बोली। "और तुम्हें लगता है कि पूरी दुनिया चोर-उचक्कों और पुलिसवालों से भरी पड़ी है।"

नौवीं में पढ़ने वाली बीना को बहुत कुछ पता था। वो तो मेंढक को काटकर भी देख चुकी है। उसने बताया था कि मेंढक अन्दर से इंसानों जैसा ही होता है। पर, उसे भी सब कुछ नहीं पता। किसी को भी सबकुछ नहीं पता होता है। सच है ना? और यह तो कोई भी नहीं जानता कि यह नया किराएदार गन्दा आदमी है – चोर है, स्मगलर है। *मोती मोती* ही नहीं कितनी ही दूसरी फिल्मों के खलनायक भी बिलकुल ऐसे ही दिखते हैं – *डाकू और चोर*, *खून।* कोई शक ही नहीं भाईसाहब। पर सबूत? कोई मुश्किल नहीं। रतन जल्द ही सबूत भी ले आएगा। *फैसला* फिल्म का चन्दन भी तो ऐसे ही करता है। जो चन्दन कर सकता है वो रतन क्यों नहीं?

लेकिन हीरो बनना कोई आसान काम नहीं। चन्दन तो हमेशा चोरों को

...और उसके घर का फर्नीचर तो देखो – एक झूला, एक मेज़, दो कुर्सियाँ और एक लोहे की अलमारी, बस।

सभी चित्र - उमा कृष्णास्वामी

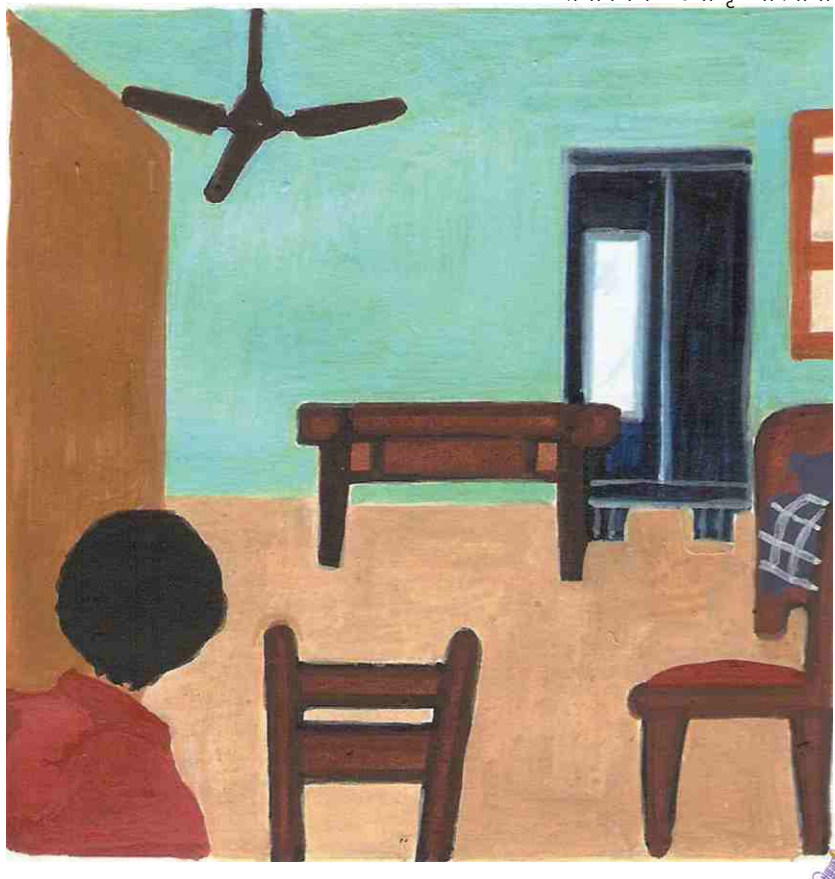

पकड़ने में ही लगा रहता था। कभी-कभी तो खुद चोर उसके पास आ जाते थे। लेकिन रतन के साथ ऐसा नहीं था। जब भी 4-सी वाले उस आदमी की खबर लेने वह ऊपर जाता, कोई ना कोई उसे बुला लेता। कभी भास्कर की मम्मी कहती, "रतन, क्या तुम भास्कर को तुरन्त घर आने के लिए कह सकते हो?" तो कभी गोपी की माँ कहती, "जाओ और जल्दी से एक किलो घी ला दो।" या फिर उसके पापा कहते, "रतन बेटे, यह कपड़े 5-डी वाली धोबिन को दे आओ। वो यहीं भूल गई है।"

इतना ही नहीं कोई रतन की मदद भी नहीं करता था। भास्कर भी नहीं। "भूल जा यार।" भास्कर कहता। "चल, क्रिकेट खेलते हैं। चाहे तो तू फील्डिंग कर लेना।" और वो मोटा गोपी, अपनी बालकनी में खड़े-खड़े जब देखो तब रतन को चिढ़ाया करता, "ओए, कितने चोर पकड़ लिए तूने?" कल के सारे अखबारों में तेरी ही तेरी खबर होगी – चौकीदार के बेटे ने स्मगलर को रंगे हाथों पकड़ा।

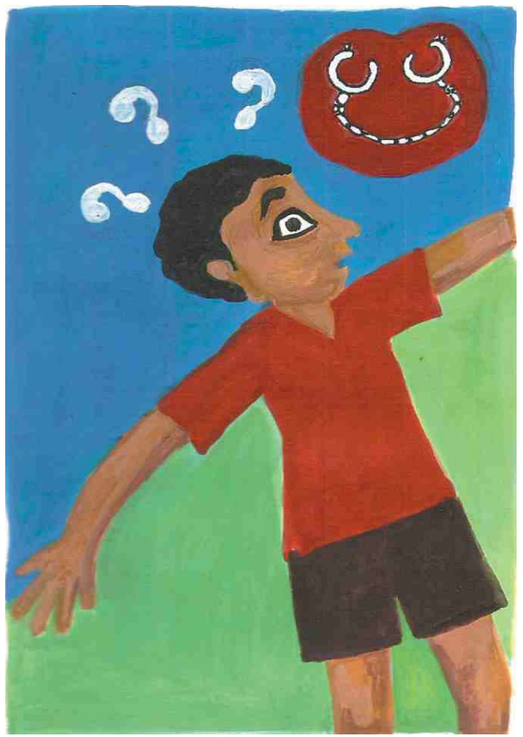

उनमें से एक ने ज़ेब में हाथ डाला। शायद हथकड़ी निकालने के लिए? रतन सोचने लगा, अब मैं कुछ नहीं कर सकता।

लेकिन रतन ने हार नहीं मानी। हीरो लड़के कभी भी हार नहीं मानते। वे मौके का इन्तज़ार करते हैं।

एक दोपहर वह आदमी जल्दी आ गया। आमतौर पर वह 6 बजे के समाचार के बाद ही आता था। पर, उस दिन भास्कर और दूसरे बच्चों के स्कूल से आने के पहले ही वो आ गया था। उस वक्त रतन दरवाज़े के पास बैठा था। उसके पास से गुज़रते हुए वो आदमी एक पल ठहरा और बोला, "ऐ लड़के, क्या तुम सिगरेट का एक पैकेट ला सकते हो? 4-सी में ले आना। 4-सी, नम्बर, याद रहेगा ना?"

याद रहेगा? यह नम्बर तो रतन के दिलोदिमाग में बस चुका था। 4-सी, स्मगलर का ठिकाना। हाँ, इंस्पेक्टर, वो 4-सी में ही रहता है। नहीं, सर, अब वो बच नहीं सकता। मैंने बाहर से चटखनी लगा दी है.....

चन्द मिनटों में रतन सिगरेट के पैकेट के साथ लिफ्ट में था। उसकी आँखें चन्दन की तरह मिचमिची-सी हो गई थीं। होंठ फैल गए थे। बस, थोड़ा इन्तज़ार करो, और सबूत मेरे हाथ में होगा। फिर तो पुलिस को फोन करना ही रह जाएगा। फोन तो भास्कर या गोपी के घर से किया जा सकता है। पुलिस आएगी तब गोपी को पता चलेगा...

4-सी का दरवाज़ा आधा खुला था। रतन ने रुककर अपनी भौंहों से पसीना पोंछा। फिल्म में खलनायक से सामना करने से पहले हीरो भी ऐसे ही करता है।

पीठ दीवार से सटाए, बाँहें फैलाए, चेहरा एक और घुमाए वह धीरे-धीरे दरवाज़े की ओर सरका। जाने क्या दिखाई दे जाए? सुनाई दे जाए? वो आदमी फोन पर था। रतन को नम्बर डायल करने की आवाज़ सुनाई दी। ज़रा देर को चुप्पी छा गई। फिर उस आदमी की आवाज़ सुनाई दी, "हाँ, भेज दो।"

रतन का दिल ज़ोरों से धड़कने लगा। तो मेरा शक सही निकला। यह स्मगलर ही है। इसका माल आ रहा है। घड़ियाँ, सोना और जाने क्या-क्या होगा! क्या पता एक घड़ी बतौर इनाम मुझे ही मिल जाए। वो हमेशा एक विदेशी घड़ी लेना चाहता था। दूसरी घड़ियों में उसे टाइम देखना नहीं आता था। शायद अब.....

"ऐ लड़के, तू..., तू यहाँ क्या कर रहा है?" लिफ्ट से निकलते हुए गोपी के पापा चिल्लाए। "चोरी की कोशिश कर रहा था? आज रंगे हाथ पकड़ ही लिया....."

"लेकिन म... म... मैं" रतन हकलाने लगा और अपने-आप को छुड़ाने की कोशिश करने लगा। गोपी के पापा ने उसका हाथ और भी कसकर पकड़ लिया। रतन कुछ देर छटपटाया पर खुद को छुड़ा न पाया। चन्दन होता तो लात मारकर खुद को छुड़ा लेता। पर, रतन गोपी के पापा को

कैसे लात मार सकता था। इतने में 4-सी का दरवाज़ा खुला और वो आदमी बाहर निकल आया।

"मैंने इस लड़के को चोरी करते पकड़ा है।" गोपी के पापा चिल्लाए। "यह तुम्हें लूटने वाला था। मुझे तो पहले से ही शक था इस पर..."

वो आदमी अपने ऊबड़-खाबड़ दाँत दिखाते हुए मुस्कुरा दिया। रतन बुरी तरह डर गया था। अब क्या होगा? यह आदमी मुझे अपने फ्लैट में ले जाकर जाने क्या करे? शायद मार डाले? पर, अगर मैं गोपी के पापा को इस आदमी के बारे में, फोन के बारे में बता दूँ तो.....

लेकिन यह क्या? वो आदमी तो कह रहा था, "अरे, इसे छोड़ दें। यह भला लड़का है। मेरे लिए सिगरेट लाने गया था। और मेरा इन्तज़ार कर रहा था, बस।"

"तुम्हें पूरा यकीन है।" गोपी के पापा ने बुदबुदाते हुए अनमने मन से रतन को छोड़ दिया। उस आदमी ने रतन से सिगरेट और बाकी पैसे लिए और मुस्कुराते हुए बोला, "तो लड़के, क्या तुम मुझ से कराटे सीखना चाहोगे?"

रतन ने उसकी ओर देखा और तुरन्त हामी भर दी।

"फिर तो यह लोगों के साथ मार-काट भी करने लगेगा।" गोपी के पापा गरज़ते हुए बोले। वे कुछ और कहने ही वाले थे कि हो-हल्ले की आवाज़ आई। अचानक सीढ़ियों पर तेज़ कदमों की आवाज़ आई। सभी फ्लैटों के दरवाज़े खुलने लगे।

"पुलिस!" किसी की आवाज़ आई।

"पुलिस! इतनी जल्दी। लेकिन अभी तो मैंने फोन भी नहीं किया। क्या वे उस आदमी को ले जाएँगे?"

"फिर मुझे कराटे कौन सिखाएगा? सभी हीरो लड़कों को कराटे आते हैं। चन्दन को भी।"

अचानक ही गोपी के पापा दूध रोटी फिल्म के साहूकार जैसे लगने लगे थे। हाथ बाँधे वो पुलिसवालों से कुछ कह रहे थे।

पुलिस दूसरे माले तक पहुँच गई थी, अब तीसरे पर। क्या वे लोग वहीं रुक गए हैं? नहीं, ऊपर आ रहे हैं। चौथे माले पर पहुँचकर वे लोग रुक गए।

उनमें से एक ने जेब में हाथ डाला। शायद हथकड़ी निकालने के लिए? रतन सोचने लगा, "अब मैं कुछ नहीं कर सकता। लेकिन क्या एक आखिरी कोशिश की जा सकती है? अचानक पुलिसवाले के पेट पर एक ज़ोरदार लात तो जमाई ही जा सकती है?"

लेकिन यह क्या? पुलिसवाले ने हथकड़ी की बजाय जेब से एक कागज़ निकाला और गोपी के पापा को दिखाया। अचानक गोपी के पापा *दूध रोटी* फिल्म के साहूकार जैसे लगने लगे थे। हाथ बाँधे वे पुलिसवालों से कुछ कह रहे थे। लेकिन किसी ने उनकी एक न सुनी। एक पुलिसवाले ने उनके घर 4-बी की घण्टी बजाई। दरवाज़ा खुला और सब अन्दर चले गए। अन्दर से गोपी की मम्मी के चिल्लाने की आवाज़ें आ रही थीं।

बाद में भास्कर ने बताया कि कुछ टैक्स (आयकर) का मामला था। गोपी के पापा भी एक तरह के चोर ही हैं। पुलिसवाले देर रात तक गोपी के घर की तलाशी लेते रहे। बिल्डिंग के सभी बड़े-बच्चे जागते रहे लेकिन कोई गोपी के घर नहीं गया।

"तुम अपना सोचना जारी रख सकते हो कि वो नया किराएदार स्मगलर है। हो सकता है अगली बार पुलिस उसे ही पकड़ने आ जाए।" अगले दिन बीना कुछ हलके अन्दाज़ में रतन से बोली।

पर, बीना एक बार फिर गलत थी। हाँलाकि उसे मेंढकों के बारे में काफी कुछ पता था। लेकिन उसे यह नहीं पता कि 4- सी का नया किराएदार आने वाली फिल्म के जासूस जैसा लगता है। रतन ने अभी कल ही तो उस फिल्म का पोस्टर देखा था।